अध्यक्षीय संदेश.....

बाकी जीवों की तरह मानव भी प्रकृति का हिस्सा ही तो है। इसलिए उसके सभी क्रियाकलाप सभी जीवों तथा प्रकृति को प्रभावित करते हैं। मानव और बाकी जीवों में अंतर है तो सिर्फ उसके सोचने, समझने की ताकत और बुद्धिमानी का। यह शक्ति दूसरे जीवों में नहीं है। मानव की बुद्धिमत्ता का प्रयोग चतुराई से दूसरे के हिस्से को हड़पने में हुआ है। उसी के नाते प्राकृतिक दोहन हुआ, जीवों पर संकट भी घहराया है। उसकी बुद्धिजनित चतुराई ने उसे संग्रह के लिए प्रेरित किया और वह सबके हिस्से मारकर अपनी पीढ़ियों के लिए सुरक्षा देने की कोशिश में लगा है। स्थिति अब इतनी बिगड़ चुकी है कि अब उसके अपने जीवन पर भी प्रभाव पड़ने लगा है।

प्राकृतिक संपदा के दोहन से मिट्टी खराब हुई और पानी की कमी हो गई। विकास की आड़ में परंपरागत चीजों और विधियों का तिरस्कार हुआ। येन–केन प्रकारेण उत्पादकता बढ़ाने की उत्सुकता में उत्पाद की गुणवत्ता खराब हो गई, जिसके फलस्वरूप उसकी सेहत पर असर हो रहा है। उसे अब मजबूरी में वही परंपरागत खान–पान अच्छा लगने लगा है। अब समस्या है कि पारंपरिक तरीकों से मनचाही फसलों की खेती द्वारा उत्पादकता के स्तर और खाद्य–सुरक्षा को बरकरार कैसे रखा जाय। भविष्य में वैज्ञानिकों के लिए यह चुनौती होगी। कोरोना काल में आदमी समझ गया कि पेट भरा होने और रोग प्रतिरोधक क्षमता होने में बहुत अंतर है। बहुत सारे उत्पाद जो कम पानी, खाद में पैदा होते थे उन्हें हमने खाना छोड़ दिया मोटा और खराब अनाज कहकर। अब उनके गुणगान सुनते हैं कि वे भरपूर हैं प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए। हमें पता चल गया है कि "जान नहीं तो जहान हमारे काम का नहीं है"। अब फिर से सामंजस्य बिठाना होगा उपलब्धता और पौष्टिकता का जिससे सही विकास हो और प्रकृति का दोहन न हो, बल्कि दिनोंदिन उन्नत बने।

प्रकाशन के इस अंक में ऐसी ही सामंजस्य बिठाती कृतियाँ हैं। जानकारी है वही पुरानी कि केचुए की खाद कैसे बने, परंपरागत खेती कैसे हो, मृदा सुधार कैसे हो। पौष्टिक अनाज और लाभकारी खेती में स्ट्राबेरी, मशरूम, गन्ने और मसूर की लाभकारी खेती की बात है। गृहवाटिका में क्या बोया जाय जो लाभदायक और स्वास्थ्यवर्धक हो। ग्रामीण अंचल में पौष्टिकता बरकरार रखने के लिए भी यह बहुत जरूरी है। परिस्थितियों के दबाव में ग्रामीण परिवेश की हालत यह हो गई है कि वे अच्छी चीजें पैदा तो करते हैं पर खा नहीं पाते। बेच देते हैं कि कुछ पैसे मिलेंगे, और घर के किसी काम आएंगे। यह हालत चिंताजनक है और चिंताजनक हालत किसी के लिए चुनौती लाती है। यह सब हम लोगों के लिए चुनौती है।

आशा है यह अंक किसान भाइयों के लिए लाभकारी होगा और इसका लाभ उठा पाएंगे। सभी निरोग और सुरक्षित हों, इसी कामना के साथ आपको प्रस्तुत है।

– अध्यक्ष
रॉयल विज्ञान सेवित सामाजिक सांस्कृतिक संस्था

सम्पादकीय.....

'राजर्षि संदेश' रॉयल विज्ञान सेवित सामाजिक–सांस्कृतिक उन्नयन संस्था (रासा) की एक हिंदी पत्रिका है जिसे साल में दो बार प्रकाशित किया जाता है। इस पत्रिका के द्वारा देश के छोटे–बड़े सभी किसानों को उनकी आमदनी बढ़ाने के लिए कृषि एवं कृषि से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर वैज्ञानिक जानकारी दी जाती है।

'राजर्षि संदेश' का यह 2021 वर्ष का द्वितीय अंक है जिसमें गृह वाटिका में रबी के मौसम में बोयी जाने वाली सब्जियां व उनकी देखभाल, मसूर की वैज्ञानिक खेती, शीत ऋतु गन्ना की खेती, स्ट्रॉबेरी आय एवं पौष्टिकता का सबसे बढ़िया स्त्रोत, मशरूम उत्पादन, केंचुआ खाद का उत्पादन एवं प्रयोग व प्राकृतिक खेती का महत्व आदि लेख सम्मिलित किए गए हैं । इन लेखों के द्वारा किसान भाई व बहने अपने फार्म की उत्पादकता एवं आमदनी बढ़ा सकते हैं। इसके आलावा कुछ लेख मृदा, पानी एवं वातावरण को शुद्ध रखने के लिए भी सम्मिलित किए गए हैं।

हम इस अंक के सभी लेखकों का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने इस करोना काल में अपना बहुमूल्य समय निकालकर उपर्युक्त विभिन्न विषयों पर अपना–अपना लेख भेजा। संपादक मंडल सभी लेखकों एवं पाठकों को आने वाले नए वर्ष 2022 की शुभ कामनाएं व हार्दिक बधाई देता है।

– सम्पादकीय मण्डल